

International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2021; 3(1): 01-04
Received: 02-11-2020
Accepted: 07-12-2020

Vinod
Ph.D., Research Scholar,
Department of Defense and
Strategic Studies, M.D.U
Rohtak, Haryana, India

भारत, चीन, पाकिस्तान की परमाणु क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

Vinod

प्रस्तावना

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ ही परमाणु युग की शुरुआत हो गई थी। अमेरिका द्वारा जापान पर गिराये गए परमाणु बमों के साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति और परमाणु युग की शुरुआत हुई। इसके पश्चात तो मानों जैसे सम्पूर्ण विश्व में ही परमाणु शस्त्रों की दौड़ की जैसे होड़ ही लग गई। सभी राष्ट्र एक-दूसरे को पछाड़ने के लिए परमाणु हथियारों का भण्डारण करने में जुट गए। यही कारण रहा कि राष्ट्रों की परमाणु तकनीक हासिल करने की ललक ने आज सम्पूर्ण विश्व को एक ऐसे विनाश के मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां पर मानव द्वारा की गई जरा सी चूक उसे पूर्ण रूप से नष्ट कर सकती है। आज सम्पूर्ण विश्व के पास ऐसे अनेकों हथियार हैं, जो सम्पूर्ण विश्व को एक बार नहीं सैकड़ों बार नष्ट कर सकते हैं।

1945 में अमेरिका द्वारा शुरू किए गए इस विनाशकारी कार्य की शुरुआत के बाद सभी राष्ट्र इस रेस में शामिल हो गए परिणामस्वरूप आज सभी राष्ट्र एक-दूसरे राष्ट्र द्वारा किए गए सुरक्षा उपायों को अपने लिए खतरा मानते हैं इसलिए वो मजबूरन इस दौड़ में शामिल होना चाहते हैं ताकि अपने राष्ट्र की सुरक्षा को कायम रख सकें।

विभिन्न राष्ट्र द्वारा किए गए प्रथम परमाणु परिक्षण

देश	दिनांक
अमेरिका	16 जुलाई 1945
रूस	29 अगस्त 1949
ब्रिटेन	3 अक्टूबर 1952
फ्रांस	13 फरवरी, 1960
चीन	16 अक्टूबर 1964
भारत	18 मई 1974
पाकिस्तान	28 मई 1998

इस प्रकार विश्व के सभी राष्ट्र परमाणु तकनीक प्राप्त करने में लगे हुए हैं। यदि बात भारत चीन और पाकिस्तान की जाए तो ये तीनों राष्ट्र लम्बे समय तक ब्रिटिश शासन के अधीन रहे। 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वाधीनता मिली। आजादी के तुरन्त बाद ही मुस्लिम लोगों ने अपने लिए अलग राष्ट्र की मांग की और परिणाम स्वरूप पाकिस्तान का जन्म हुआ। पाकिस्तान के जन्म के साथ ही भारत के लिए अनेक समस्याएं पैदा हो गईं। उन समस्याओं पर जैसे जैसे समय के साथ काबू पा लिया गया परन्तु कश्मीर समस्या आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। चीन भारत से दो वर्ष बाद आजाद हुआ लेकिन फिर भी चीन ने अपनी सुरक्षा नीति पर इतना ध्यान दिया कि उसने भारत को इस क्षेत्र में काफी पीछे छोड़ दिया है। चीन द्वारा 1964 में किया गया परमाणु परिक्षण इस बात का सबूत है कि चीन ने अपनी सुरक्षा की तरफ बहुत अधिक ध्यान दिया है। चीन द्वारा परमाणु तकनीक प्राप्त किये जाने के बाद भारत को भी यह मजबूरी बन गई कि वो भी अपनी परमाणु क्षमता प्राप्त करें। क्योंकि चीन 1962 में भारत को सीमा विवाद के मसले पर अपमानित कर चुका था। उसके अलावा पाक-चीन गठजोड़ भी किसी से छुपा नहीं है। इसलिए भारत की यह सबसे बड़ी जरूरत थी कि वह परमाणु क्षमता हासिल करे क्योंकि इसके अभाव में वह अपनी सुरक्षा के बारे में सोच भी नहीं सकता।

चीन द्वारा प्राप्त परमाणु तकनीक और विश्व में बढ़ते परमाणुकरण के कारण भारत ने अपना परमाणु कार्यक्रम तैयार किया। इस कार्यक्रम को भारत ने 18 मई 1974 को मूर्त रूप प्रदान किया। श्रीमति इन्दिरा गांधी कि अगुवाई में किये गए इस परिक्षण की बड़ी शक्तियों ने बड़ी निंदा की क्योंकि बड़ी शक्तियाँ कभी नहीं चाहती थी कि भारत परमाणु सम्पन्न राष्ट्र हो। इसलिए उन्होंने इसे निश्चिन्ताकरण के लिए एक बड़ा झटका माना। अपने प्रथम परमाणु परिक्षण के साथ ही भारत ने यह सिद्ध कर दिया कि वह न परमाणु सम्पन्न राष्ट्र बन गया है बल्कि चीन की हमला करने की नीति का भी आसानी से जवाबी कार्यवाही कर मुँह तोड़ जवाब दे सकता है।

Corresponding Author:
Vinod
Ph.D., Research Scholar,
Department of Defense and
Strategic Studies, M.D.U
Rohtak, Haryana, India

चीन पाक और भारत का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हमें पता चलता है कि चीन ने भारत व पाक की अपेक्षा बहुत अधिक तरक्की की है। चीन ने भारत से 10 साल पहले परमाणु परिक्षण किया जबकि भारत ने पाकिस्तान से चार साल पहले। आज पाक की तुलना में भारत काफी शक्तिशाली है लेकिन पाक को चीन सहयोग के कारण पाक अपनी सैन्य हरकतों से बाज नहीं

आ रहा है। उसने अपने अधीन कश्मीर का क्षेत्र भी चीन को उपहार स्वरूप भेंट कर दिया है। क्योंकि उसे पता है कि चीन को क्षेत्र देने के बाद भारत उसके बारे में हस्तक्षेप नहीं करेगा। अब चीन वहां से रेलवे लाईन बना रहा है जो भारत की सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

तालिका 1: चीन, भारत एवं पाक कि तुलनात्मक नाभिकीय क्षमता –

चीन की परमाणु क्षमता		भारत की परमाणु क्षमता		पाकिस्तान की परमाणु क्षमता	
मिसाइल नाम	मारक क्षमता	मिसाइल नाम	मारक क्षमता	मिसाइल नाम	मारक क्षमता
HQ-61	10 K.M.	Prithvi – I	150 ज़ण्डण	हत्फ – I	70 – 100 K.M.
LY – 60	18 – 60 K.M.	Prithvi – II	250 दृ 350 ज़ण्डण	हत्फ – II	180 K.M.
PL – 12	70 K.M.	Prithvi – III	350 दृ 600 ज़ण्डण	हत्फ – VII	350 K.M.
PL – 2	6 to 10 K.M.	Agni – I	700 दृ 1200 ज़ण्डण	बाबर	700 K.M.
PL – 4	18 K.M.	Agni – II	2000 दृ 2500 ज़ण्डण	गौरी – I	1200 K.M.
PL – 9	22 K.M.	Agni – III	3000 दृ 5000 ज़ण्डण	शाहिन – I	1500 K.M.
DF	300 – 700	Agni – IV	2500 दृ 3700 ज़ण्डण	गौरी – II	1500 – 1800 K.M.
D.F. – 15	600 K.M.	Agni – V	5000 दृ 8000 ज़ण्डण	शाहिन – II	2500 K.M.
D.F. – 21	2150 K.M.	Agni – VI	8000 दृ 10000 ज़ण्डण	गौरी – III	4500 K.M.
DF – 25	3200 K.M.	Dhanush	350 ज़ण्डण	बस्तर	3000 – 6000 K.M.
DF – 31	7200 – 8000	Sagrika	700 ज़ण्डण		
DF – 11	8000 – 12000 K.M.				
DF – 41	12000 – 14000 K.M.				

संक्षिप्त व्याख्या

चीन की परमाणु क्षमता

HQ-60: यह चीन की एन्ट रडार मिसाइल है। इसकी उत्पत्ति चीन द्वारा की गई है। यह 1986 से अपनी सेवाएं दे रही है। इसका वजन 310 किलोग्राम है। इसकी लम्बाई 3.99 मीटर है तथा इसे चीन द्वारा प्रयोग किया जाता है।

LY-60 का उत्पादन चीन में किया गया है। यह मिसाइल 1980 से अपनी सेवाएं दे रही है। उस मिसाइल को चीन ने पाक से निर्यात किया है। इसका वजन 220 किलोग्राम तथा लम्बाई 3.70 मीटर है।

PL-12 का उत्पादन चीन में किया गया है। इसका प्रयोग चीन की तीनों सेनाओं के द्वारा किया जाता है। इसका वजन 180 किलोग्राम तथा लम्बाई 3.85 मीटर है।

PL-2: इस मिसाइल की उत्पत्ति चीन द्वारा की गई है। इसमें रॉकेट इंजन लगा हुआ है। इसकी लम्बाई 2.15 मीटर से 2.99 मीटर है। इसका प्रयोग चीन की थल सेना में किया जाता है।

PL-4: इस मिसाइल की मारक क्षमता 18 किलोमीटर तथा वजन 150 किलोग्राम है। यह चीन की कम मारक क्षमता की मिसाइल है।

PL-9: यह चीन की Short Range Ballist Missile है। यह स्वयं चीन द्वारा निर्मित की गई है। इसकी मारक क्षमता 22 किलोग्राम है।

DF - 15: यही चीन की SRBM मिसाइल है। इसकी मारक क्षमता 300–700 किलोमीटर है। इसका वजन 6200 किलोग्राम है तथा लम्बाई 9.1 मीटर है।

DF-21: यह M.R.B.M. है। इसकी उत्पत्ति चीन द्वारा की गई है। इसका वजन 14700 किलोग्राम है। इस मिसाइल की लम्बाई 10.7 मीटर है तथा इसकी मारक क्षमता 2150 मीटर है।

DF-25: यह I.R.B.M. की श्रेणी में आती है। इसकी मारक क्षमता 3200 किलोमीटर है।

DF-3A: यह चीन द्वारा निर्मित मिसाइल है। जो 1971 से अपनी सेवाएं दे रही है। इसकी चीन ने अरब को निर्यात किया है।

DF-41: यह I.C.B.M. मिसाइल है। इसका निर्माण चीन द्वारा किया गया है। इसका प्रयोग चीन की द्वितीय तोपखाना सेना द्वारा किया जाता है इसका वजन 42000 किलोग्राम है। इसकी

लम्बाई 15 मीटर तथा मारक क्षमता 12000–14000 किलोमीटर है।

DF-31: यही चीन की फ्लड मिसाइल है। यह 2006 से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इसकी लम्बाई 13 मीटर तथा वजन 42 टन है। इसकी मारक क्षमता 8000 किलोमीटर है।

DF-11: यह चीन की 8000–12000 किलोमीटर मारक क्षमता की मिसाइल है। इसका वजन 42000 किलोग्राम है। इसका प्रयोग चीन की थल और नौ सेना द्वारा किया जाता है।

भारत की परमाणु क्षमता

इसमें अतिरिक्त भारत के पास 90–110 परमाणु हथियार हैं।

पृथ्वी-I: यह भारत की 150 किलोमीटर मारक क्षमता वाली मिसाइल है। यह 1000 किलोग्राम तक पेलोड ले जाने में सक्षम है। इसे भारतीय थल सेना द्वारा प्रयोग किया जाता है।

पृथ्वी-II % यह 250–350 किलोमीटर मारक क्षमता की मिसाइल है। यह 500 से 1000 किलोग्राम तक वजन ले जाने में सक्षम है। इसे भारत थल और वायु सेना द्वारा प्रयोग किया जाता है।

पृथ्वी-III : यह भारत की 380 से 600 किलोमीटर मारक क्षमता की मिसाइल है। यह 250–500 किलोग्राम भार ले जाने में सक्षम है। इसे तीनों सेनाओं द्वारा प्रयोग किया जाता है।

अग्नि-I: इस मिसाइल का परिक्षण 1989 में चान्दपुर में किया गया। इस मिसाइल की मारक क्षमता 700–12000 किलोमीटर है। यह 1000 किलोग्राम तक वजन ले जाने में सक्षम है। इसे भारतीय थल सेना द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।

अग्नि-II: यह भारत की IRBM (Intermediate Range Ballistic Missile) है। इसका वजन 18 टन तथा लम्बाई 21 मीटर है। इसे DRDO द्वारा परिक्षित किया गया है।

अग्नि-III: यह भारत की IRBM (Intermediate Range Ballistic Missile) है। इसे D.R.D.O. द्वारा निर्मित किया गया है। इसका वजन 48000 किलोग्राम है। इस मिसाइल की मारक क्षमता 3000–5000 किलोमीटर है। इसकी लम्बाई 17 मीटर है। इसको बनाने में लगभग 250 मिलीयन से 350 मिलीयन खर्च हुआ है।

अग्नि-IV: यह मिसाइल भारतीय थल सेना द्वारा प्रयोग में लाया

जाता है। यह भारत द्वारा निर्मित प्लूड मिसाइल है। इसका वजन 17000 किलोग्राम तथा लम्बाई 20 मीटर है। इसकी मारक क्षमता 2500 से 3700 किलोमीटर है।

अग्नि-V: यह भारत द्वारा निर्मित IBM (Intercontinental Ballistic Missile) है। इसे बनाने में लगभग 500 मिलियन खर्च हुआ है। इसे D.R.D.O. द्वारा बनाया गया है। इसका वजन 50000 किलोग्राम तथा लम्बाई 19.5 मीटर है। इसकी क्षमता 5000-8000 किलोमीटर है।

धनुष: यह भारत की Intermediate Range Ballistic Missile है। इसकी मारक क्षमता 350 किलोमीटर है। यह भारत की Sea Based Armed Ballistic Missile है।

सागरिका: यह भारत की Submarine Launched Ballistic Missile है। इसकी मारक क्षमता 700 किलोमीटर है।

विक्रान्त ऐयरक्राफ्ट करियर: यह भारत का पहला ऐयरक्राफ्ट करियर है। जिसे भारत में ही कोच्चे शिपमार्ड लिमिटेड में निर्मित किया गया है।

INS Arihant – The Nuclear Submarine: यह भारत के विशाखापट्टनम में निर्मित 5000-6000 टन वजन ले जाने में सक्षम पनडुब्बी है। इसे 2011 में भारतीय नौ सेना में शामिल किया गया है। उसके निर्माण के साथ ही भारत विश्व का छटा पन्डुबी बनाने वाला राष्ट्र बन गया।

इसके अतिरिक्त भारत के पास 2 Aircraft Carrier है जबकि चीन के पास केवल एक ही Aircraft Carrier है, जबकि पाकिस्तान के पास Aircraft Carrier नहीं है। भारत ने अपनी नौ सेना की ताकत को बढ़ाने के लिए फ्लैट बॉट नामक पन्डुबी रूस से आयात की है।

पाकिस्तान की परमाणु क्षमता

हफ्त-I: यह पाक की Battle Field Range Ballistic Missile है। इसे सन् 1989 में प्रयोग में लाया गया। इसका वजन 1500 किलोग्राम, लम्बाई 6 मीटर तथा मारक क्षमता 70-100 किलोमीटर है।

हफ्त-II: यह पाक द्वारा निर्मित Sort Range Ballistic Missile है। इसे 1996 में प्रयोग में लाया गया। इसका वजन 1750 किलोग्राम, लम्बाई 9.75 मीटर तथा मारक क्षमता 180 किलोग्राम है।

हफ्त. III: यह पाक द्वारा निर्मित Air Launched Cruise Missile है। इसका प्रयोग 2007 में पाक वायु सेना द्वारा किया जाता है। इसका वजन 1100 किलोग्राम तथा लम्बाई 4.85 मीटर है। इसकी मारक क्षमता 350 किलोमीटर है।

बाबर: यह पाक द्वारा निर्मित Medium Range Subsonic Cruise Missiles है। इसने 2005 से अपनी सेवाएं देनी शुरू की है। इसका प्रयोग पाकिस्तान थल सेना द्वारा किया जाता है। इसका वजन 1500 किलोग्राम, लम्बाई 6.25 मीटर तथा मारक क्षमता 700 किलोमीटर है।

गौरी-I: यह पाकिस्तान द्वारा निर्मित Medium Range Ballistic Missile है। यह 2003 में पाकिस्तान सेना में शामिल की गई। इसका उत्पादन 'खान रिस्सर्च लेबोरेशन' द्वारा किया गया। इसका वजन 15850 किलोग्राम है। इसकी लम्बाई 15.90 मीटर तथा मारक क्षमता 1200 किलोमीटर है।

शाहीन-I: यह पाक द्वारा निर्मित Sort Range Ballistic Missile है। इसके प्रयोग द्वारा Army Strategic Command किया जाता है। इसका वजन 9500 किलोग्राम, लम्बाई 12 मीटर तथा मारक क्षमता 1500 किलोमीटर है।

गौरी-II: यह पाक द्वारा निर्मित Medium Range Ballistic Missile है। इसका उत्पादन 'खान रिस्सर्च लेबोरेशन' द्वारा किया गया है। इसका वजन 17800 किलोग्राम, लम्बाई 18 मीटर तथा मारक क्षमता 1500-1800 किलोमीटर है।

शाहीन-II: यह Medium Range Ballistic Missile है। इसका उत्पादन पाकिस्तान के कमिदबम ब्युचसमग द्वारा किया गया है। इसका प्रयोग पाकिस्तान थल सेना द्वारा किया जाता है। इसका वजन 25000 किलोमीटर है। इसकी लम्बाई 17.5 मीटर तथा मारक क्षमता 2500 किलोमीटर है।

गौरी-III: इसको Eagle-III के नाम से भी जाना जाता है। यह IRBM (Intermediate Range Ballistic Missile) है। इसका निर्माण पाकिस्तान द्वारा किया गया है। इसका डिजाइन NESCON and Suparco द्वारा किया गया है। इसकी मारक क्षमता 4500 किलोमीटर है। बक्तर: यह पाकिस्तान द्वारा निर्मित Anti Tank Missile है। इसका निर्माण चीन द्वारा किया गया है तथा पाकिस्तान ने इसे चीन से आयात किया है। इसके 1970-84 में डिजाइन किया गया था। इसका प्रयोग पाकिस्तान नौ सेना द्वारा किया जाता है। इसका वजन 25 किलोग्राम, लम्बाई 1.56 मीटर तथा मारक क्षमता 3000-6000 किलोमीटर है।

इस प्रकार तीनों राष्ट्रों की तुलनात्मक परमाणु क्षमता का अध्ययन करने के बाद यह पता चलता है कि तीनों राष्ट्रों के पास पर्याप्त मात्रा में परमाणु सामग्री है। इसलिए तीनों राष्ट्रों को बिना आपसी टकराव के परस्पर एक-दूसरे राष्ट्र के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

यदि भारत व चीन दोनों राष्ट्र मिलकर एक-दूसरे के साथ कार्य करे तो पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं। लेकिन चीन की भारत विरोधी नीति और पाकिस्तान का चीन की तरफ झुकाव चीन को भारत के साथ काम करने की इजाजत नहीं देता। पाकिस्तान एक विफल राष्ट्र है। जिसमें आजादी के बाद ज्यादातर समय सैन्य शासन ही लागू रहता है। क्योंकि यह पाकिस्तान की राजनीति में एक मुख्य तथ्य रहा है कि वहां जिस भी नेता ने लोकतन्त्र स्थापित करने की कोशिश की है। उसे या तो देश छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा या फिर उसे मौत के घाट उतार दिया गया। इसलिए वहां पर कभी भी लोकतन्त्र पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाया।

पाकिस्तान की भारत विरोधी नीति भारत-पाक संबंधों में तनाव का मुख्य कारण रही है। पाकिस्तान आजादी से ही भारत को अपना शत्रु मानता रहा है इसलिए उसने समय-समय पर भारत पर हमला करने की कोशिश की है और उसे हर बार मुँह की खानी पड़ी है। अपनीहार का बदला लेने के लिए वह आतंकवाद जैसी हरकतें करने से भी बाज नहीं आता। वह भारत के खिलाफ आतंकवाद फैलाने के लिए समय-समय पर आतंकवादियों के परिक्षण कैम्प लगाता है। वह जम्मू-कश्मीर में लगातार आतंकवादी घटनाओं का अन्जाम देता रहा है। भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई पर किए गए आतंकवादी हमले में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। लेकिन पुख्ता सबूत होने पर भी वह अपना गुनाह कबूल करने से इन्कार कर देता है। भारत ने कई बार इस मुद्दे को U.N.O. में भी उठाया है। लेकिन बड़ी शक्तियाँ नहीं चाहती कि इस मसले को हल किया जाए क्योंकि यदि भारत-पाकिस्तान में शान्ति समझौता हो गया तो भारत अपना सम्पूर्ण ध्यान अपने विकास पर लगा सकता है। इसलिए बड़ी ताकतें जानबूझ कर पाकिस्तान को अप्रत्यक्ष रूप से भारत के खिलाफ भड़काता रहता है और उसे आर्थिक व सैनिक सहायता प्रदान करता है। दूसरी तरफ भारत हमेशा से ही शान्ति के मार्ग पर चलने का अनुयायी रहा है। भारत की

इसी शान्ति व्यवस्था का खामियाजा भारत आज तक भुगत रहा है। 1947 से शुरू हुई कश्मीर समस्या को भारत ने शान्तिपूर्ण रूप से सुलझाने के लिए U.N.O. का सहारा लिया। लेकिन समस्या आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

परमाणु शक्ति प्राप्त करना भी भारत की एक मजबूरी रही है क्योंकि चीन परमाणु सम्पन्न राष्ट्र बन चुका था इससे भारत की सुरक्षा का प्रत्यक्ष रूप से खतरा उत्पन्न हो गया था। परमाणु सम्पन्न राष्ट्र बनने से पहले भी चीन 1962 में भारत को सीमा विवाद में अपमानित कर चुका था। इसलिए भारत को यदि स्थायी सुरक्षा चाहिए तो उसको परमाणु शक्ति प्राप्त करना उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता हो गई थी। इसलिए भारत ने 1974 में अपनी परमाणु शक्ति अर्जित करके अपनी सुरक्षा को सुदृढ़ किया। पाकिस्तान ने इसे अपने लिए खतरनाक बताते हुए अपना परमाणु कार्यक्रम शुरू किया और 1998 में परमाणु विस्फोट करके यह दिखा दिया कि पाकिस्तान भी परमाणु सम्पन्न राष्ट्र बन चुका है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी रक्षा की तरफ अधिक ध्यान नहीं दिया। इसलिए चीन भारत से बाद में आजाद होने के बाद भी रक्षा के क्षेत्र में भारत से कहीं अधिक आगे है।

आज भारत, पाकिस्तान व चीन तीनों ही राष्ट्रों के पास परमाणु तकनीक है इसलिए इन तीनों राष्ट्रों को परस्पर मिलकर कार्य करना चाहिए ताकि सम्पूर्ण विश्व को अपने विकास के साथ प्रभावित किया जा सके।

सन्दर्भ

1. China's Military and India, Srikanth Kndapalls Pentagen Press 206, Peacock Lane, Shahpur Jat, New Delhi, p. 89
2. China's Military Power, Deptt. of Devence U.S.A., Mans Publications, 4402/5A, Ansari Road, New Delhi, p. 14
3. South Asia, Defence and Strategic Year Book, Col. Harjeet Singh (Retd.) Pentagon Press, 206 Peacock Lane, Shahpur Jat, New Delhi, 2012, p252
4. Nuclear India, Brigadier Vijai K. Nair U.S.M. (Retd.) by Lancer International, B-3 Gulmohar Park, New Delhi, 1992, p152-172.
5. Nuclear Pakistan, Dr. Shalini Chawala, 4676-21, First Floor Ansari Road, Daryaganj, New Delhi, p. 107
6. अरोड़ा, लिपाक्षी/खन्ना, वी.एन. (2008): "भारतीय विदेश नीति", विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि., ए-22, सेक्टर-4, नोएडा-201301 (उत्तरप्रदेश)
7. उपाध्याय, डॉ. अर्चना 2005: "भारत की विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध", संजय प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
8. दीक्षित, जे.एन. 2005: "भारत की विदेश नीति और उसके पड़ोसी", ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
9. दीक्षित, जे.एन. 2005: "भारत की विदेश नीति और उसके पड़ोसी", ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
10. दीक्षित, जे.एन. 2006: "भारत की विदेश नीति और आतंकवाद", ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, अंसारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली-110002
11. पाण्डेय, बाबूराम/रामसूरत 2008: "राष्ट्रीय सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंध", प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली-243003
12. मिश्रा, सुरेन्द्र कुमार 2005: "राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा",

मार्डन पब्लिशर्स, रेलवे रोड़, जालंधर

13. मिश्रा, सुरेन्द्र कुमार 1998: 'युद्ध का अध्ययन', मार्डन पब्लिशर्स, रेलवे रोड़, जालंधर
14. रत्न कृष्ण कुमार 2005: "दक्षिण एशिया : आतंक का साया और सार्क घोषणाएं", बुक एनक्लेव, जैन भवन, जयपुर-302006
15. शर्मा, डॉ. हरवीर 1994-95: "भारत का सामरिक परिवेश", हर्यम्बुज प्रकाशन, मेरठ-250001